कोरोना के कहर में

शारिक नुमानी

छात्र – अलायंस विश्वविद्यालय

खामोश है अहले जमीं और बेबस है इंसान
कुदरत का कहर है और खामोशी की शान।

नाराज कर दिया तूने कुदरत को ऐ इंसान
मुसीबत की इस घड़ी में अब तो इंसानियत को पहचान।

भूल चुके हो तुम इंसानियत , कहते हो खुद को इंसान
अरे तुमसे अच्छे जानवर, जिन्हें कहते तुम नादान।

उठो तुम अपने मोह से ऊपर, खुद की आत्मा को पहचान
करो कुछ ऐसा काम , जिससे फिर कहलाओ इंसान।